सिलिकोसिस नहीं लेगा जान : नक्काशी से जुड़े कारीगरों की जान बचाएगा उपकरण

सीरी के वैज्ञानिकों ने किया तैयार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

पिलानी. केन्द्रीय इलेक्ट्रोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) के वैज्ञानिकों ने पत्थर पर नक्काशी करने वाले कामगारों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले क्रिस्टलीय सिलिका (धूल) के प्रभाव से बचाने के लिए विशेष उपकरण तैयार किया है। यह उपकरण सिलिकोसिस के मरीजों की जान बचाने में कारगर साबित होगा। सीरी संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. आरके शर्मा के नेतृत्व में वैज्ञानिक डा. महेन्द्र सिंह सोनी की टीम द्वारा तैयार किए गए उपकरण को 'स्मार्ट स्टोन प्रेसीपिटेटर' नाम दिया है। राजस्थान के सिरोही, करौली, दौसा, धौलपुर, अलवर, जयपुर सहित देश के विभिन्न भागों में मूर्तियों सहित पत्थर पर नक्काशी का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है। नक्काशी कार्य करते समय पत्थर से निकलने वाले क्रिस्टलीय सिलिका धूल के कण जो कि बारीक होते हैं। सांस के साथ कामगारों के फेफड़ों में जमा हो जाते हैं। यह कण फेफड़ों के ऊपर घाव बना देते हैं तथा लम्बे समय तक पत्थर नक्काशी कार्य में लगे लोगों के सिलिकोसिस नामक रोग हो जाता है। अनेक की मौत हो जाती है।उन्होंने बताया कि इस में प्रारंभिक दिनों में रोगी के सांस लेने में कठिनाई होती है।बार-बार खांसी, बुखार के साथ साथ भूख कम लगती है तथा रोगी का वजन दिन प्रतिदिन घटने लगता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि इस रोग से कइयों की मौत हो चुकी है। आंकडे बताते हैं कि पत्थर आदि के कार्य में जुटे लोगों की औसत आयु 35 से 40 वर्ष रह गई है।

पिलानी. सीरी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया उपकरण।

सीरी का स्थापना दिवस आज

पिलानी. केन्द्रीय इलेक्ट्रोनिकी अभियान्त्रीकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) में सीरी संस्थान तथा सीएसआइआर का स्थापना दिवस शनिवार सुबह मनाया जाएगा। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. जेएल रहेजा ने बताया कि स्थापना दिवस पर होने वाले समारोह में विज्ञान भारती दिल्ली के विशेष सलाहकार ए जयकुमार मुख्यअतिथि होंगे। सीएसआइआर -आईएचबीटी के निदेशक डा. संजय कुमार,सीरी संस्थान के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक डा. वाईके जैन तथा संस्थान के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक डा. एनके स्वामी विशिष्ट अतिथि होंगे। उन्होंने बताया कि इस मौके संस्थान में लम्बे समय से सेवा करने वाले वैज्ञानिकों तथा कार्मिकों को सम्मानित भी किया जाएगा।

ऐसे काम करेगा

इस उपकरण को इस प्रकार डिजाइन किया है कि नक्काशी करते समय पत्थर से निकलने वाले धूल तथा पत्थर के कण यह उपक्रमण खुद एकत्रित कर लेता है जिससे वातावरण में किसी प्रकार प्रदूषण नहीं होता। कारीगर स्वच्छ वातावरण में बेहतर कार्य कर सकता है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. आरके शर्मा ने बताया कि उपकरण का जल्द ही व्यावसायिक उत्पादन शुरू होने वाला है। अभी इसकी कीमत तय नहीं की गई है, लेकिन प्रारंभिक प्रयोग बेहद सफल रहे हैं।